7-6-67

जिनको रचता कहा जाता है। किसको रचता? नई दुनियाँ का रचता। नई दुनियाँ को कहा जाता है स्वर्ग। वो सुखधाम। भल सुखधाम नाम कहते रहते है परन्तु समझते नही है। कृष्ण के मन्दिर को भी सुख धाम कहते है। अब वो तो हो गया छोटा मन्दिर। कृष्ण तो विश्व का मालिक था। बेहद के मालिक को जैसे कि हद का मालिक बना देते है। कृष्ण के छोटे से मन्दिर को सुखधाम कह देते है। बुधी मे नही आता है कि वो तो विश्व का मालिक था। भारत ही मे रहने वाला था। कितना फ़र्क है। तुमको भी पहले कुछ पता नही था। बाप को तो सब कुछ पता है। वो सृष्टी की आदि-मध्य-अन्त को जानते है। अब तो तुम बच्चे भी जानते हो। दुनियां मैं यह भी कोई को पता नही है कि ब्र, वि, शं कौन है। शिव तो है ऊंच ते ऊंच भगवान। अच्छा फिर प्रजापिता ब्रह्मा कहां सें आया? है तो मनुष्य ही नां। प्रजापिता ब्रह्मा तो जरूर यही चाहिये नां। जिसेस ब्राह्मण पैदा हो। प्रजापिता माना ही मुख से ऐडाप्ट करने वाला। तुम हो मुखवंशावली। अब तुम जानते हो कि कैसे ब्रह्मा को बाप ने अपना बना कर मुखवंशावली बनाई। इनमे प्रवेश मीकिय फिर कहा कि यह हमारा बच्चा भी है। तुमको मालूम पडा कि ब्रह्मा कहां सें नाम पड़ां। कैसे पैदा हुआ कुछ भी नही जानते है। सिर्फ महिमा ही गाते है कि परमपिता परमात्मा ऊंच ते ऊंच है। परन्तु यह कोई की बुधी मे नही आता है कि ऊंच ते ऊंच बाप है। वो हम सब आत्माओं का पिता है। वो भी बिन्दु रुप ही है। उनकी बुधी मे सृष्टी की आदि मध्य अन्त का ज्ञान है। अब तुमको भी नालेज मिली है। आगे यह ज्ञान जरा भी नही था। मनुष्य सिर्फ कहते रहते है कि ब्र, वि, शं परन्तु जानते नही है तो यह उन्ही को तो समझना है नां। नही जानते है तो उनको ही तो बेसमझ कहा जाता है नां। अब तुम समझदार बने हो। जानते हो कि बाप ज्ञान का सागर है। हमको भी ज्ञान सुनाते है। पढाते है। सारी दुनियां समझती है कि कृष्ण पढ़ाते है। क्या पढाते है? गीता। समझते है गीता से राजयोग सिखाया राजयोग के लिये तो फिर विनाश भी जरूर चाहिये। क्योंकि राजयोग है ही सतयुग के लिये। जरूर पुरानी दुनियां का विनाश चाहिये। उसके लिये यह महाभारत लडाई है। आधा कल्प से लेकर तुमे भक्तिमार्ग के शास्त्र पढ़ते आये हो। अब तो बाप से सुनते हो। बाप कोई शास्त्र नही बैठ कर सुनाते। वो सब है भक्ति मार्ग के। भक्ति जो करते है वो भी शास्त्रो मे मूंझ है। जो भक्ति मे है उनको ज्ञान का पता नही हो सकता। वो सब ठहरी भक्ति। जप तप करना शास्त्र आद पढ़ना सब भक्ति है। सभी भक्तो को भक्ति का फल चाहिये। क्योंकि मेहनत ही करते हैं भगवान से मिलेन के लिये। परन्तु भक्ति से कोई को भगवान मिल नही सकता। हां जब खुद भगवान आकर अपना परिचय देवे तब भक्ति को छोड कर ज्ञान लेवें। ज्ञान से सदगति भक्ति से दुर्गति। वो दोनो इकठे तो चल नही सकते। अभी तो है ही भक्ति का राज्य। सभी भक्ति है। हर एक के मुख से ओ गाड फादर जरूरनिकलेगा। अब तुम बच्चे जानते हो कि बाप ने अपना परिचय दिया है कि मै भी छोटी बिन्दी हूँ। मुझे ही ज्ञान सागर कहते है। मुझ बिन्दी ही मे सारा ज्ञान भरा हुआ है। कोई भी विद्वान आर्चाय आद की बुधी मे यह नही है। आत्मा मे ही नालेज रहती है। अभी तुम बच्चे समझते हो कि उनको परमपिता परमात्मा कहा जाता है। वो है सुप्रीम सोल। सुप्रीम अर्थात सबसे ऊंच ते ऊंच। पतित पावन बाप ही सुप्रीम है नां। मनुष्य भगवान कहेंगें तो शिव लिंग ही याद पड़ेगा। वो भी यथार्थ रीती से नही। ऐक जैसे कि आदत पड गई है कि भगवान को याद करना है। भगवान ही सुख दुःख देता है। ऐसा कह देते है। अभी तुम ऐसे नही कहेंगें। अब तुम जानते हो कि सतयुग मे सुखधाम था। दुःख का तो नाम नहीथा। कलियुग मे है ही दुःखधाम। सुख का नाम भी नही है। ऊंच ते ऊंच भगवान। वो तो सबआत्माओं का बाप है। शरीर के बाप को तो सभी जानते ही है। परन्तु यह किसीको भी पता नहीईं कि आत्माओं का बाबा भी है। कहते भी है कि हम सब ब्रदस है। तो जरूरी है कि सब एक बाप के बच्चे ठहरे नां। बीच मे कोई कह देते है कि वो तो सर्व-

व्यापी है। तेरे में है मेरे मे है। और तुम आत्मा हो यह तो तुम्हारा शरीर है। फिर तीसरी चीज हो सकती है। आत्मा को परमात्मा थोडेई कहेंगें। जीवात्मा कहा जाता है। जीव परमात्मा नही कहा जाता है। फिर परमात्मा सर्वव्यापी भला कैसे हो सकता है? वो सर्वव्यापी होता तो फिर फादर हुड हो जावे। फादर को फादर ही से वर्सा काहे का मिलेगा? बाप से तो बच्चा ही वर्सा लेता है। सभी ही फादर तो फिर बाबा किनको कहें। इतनी छोटी सी बात भी कोई की समझमे नही आती है। तब बाप कहते है कि कितने बेसमझ बन गये है। हम तुमको आज से 5000वर्ष पहले कितना समझदार बना कर गये थे। हैल्दी वैल्दी समझदार। इससे जास्ती समझदार कोई हो नही सकता। अब तुमको जो समझ मिलती है वो वहां नही होगी। वहां यह थोडेई मालूम रहता है कि हम फिर गिरेंगें। यह पता हो तो फिर सुख की भासना ही नही आवे। यह ज्ञान फिर प्राय: लोप हो जाता है। यह सिर्फ अभी तुम्हारी बुधी मे है। ब्राहम्ण ही अधिकारी रहते है। तुम्हारी बुध्दी मे है कि अभी हम ब्राहम्ण वर्ण के है ब्राहम्ण ही निमत बनते है। ज्ञान ब्राहम्णों को ही सुनाते है। ब्राहम्ण ही फिर सबको सुनाते है। गायन भी है कि भगवान ने आकर स्वर्ग की स्थापना की थी। राजयोग सिखाया था। ऊंच ते ऊंच बाप ने क्या आकर सिखाया वो तुम्ह जानते हो। और सभी के लिये तो जानते है। कृष्ण जयन्ति भी बनाते है। समझते है कि वो तो वैकुण्ठ का मालिक था। वो विश्व भर का मालिक था वो बुधीमे नही आता है। जब उनका राज्य था तो और कोई धर्म नही था। उनका ही सारे विश्व पर राज्य था और गंगा के किनारे था। अब तुमको यह कौन समझा रहे है? भगवानोवाच। बाकी वो सब तो भक्ति मार्ग के ही शास्त्र आद सुनाते है। यहां तो खुद भगवान सुना रहे है। अभी तुम समझते हो कि हम पुरुषोत्तम बन रहे है। सारी दुनियां घोरअन्धेरे मे है। गाया भी जाता है कि ज्ञान सूर्य प्रगटया अज्ञान अन्धेरा विनाश। तुम अर्थ को जानते हो। वो लोग तो जो बोलते है सो ही अनर्थ। उल्टा ही समझाते रहते है। ओम का अर्थ कितना लम्बा कर दिया है। ओम अर्थात अहम् आत्मा। मम शरीर। आत्मा परमधाम की रहने वाली है। वो दूर देश से आते है नां। उसको निराकारी दुनियां कहा जाता है। तुमको ही यह बुधी मे है कि हम शान्ति धाम के रहने वाले है। फिर हम आकर 21जन्मों की प्रारब्ध पायेंगें। तुमको तो कितनी खुशी होनी चाहिये। अन्दर मे होनी चाहिये। बेहद का बाप शिव बाबा हमको पढा रहे है। वो है ज्ञान का सागर है। सृष्टी की आदि मध्य अन्त को जानते है। बाप को याद करते है तो जरी बाप आये थे। जयन्ति भी मनाते है। यह भी तुम बच्चे जानते हो। तो कितनी खुशी रहनी चाहिये कि हमको भगवान पढाते है। कहते है बाबा हमने आपको अपना वारस भी बनाया है। बच्चा बनाया है। बाप बच्चों पर वारी जाते है। बच्चे फिर कहते है कि भगवान आप जब आवेंगें तब हम आप पर वारी जावेंगें अर्थात बच्चा बन जावेंगें। यह भी अपना बच्चो को हो वारस बनाते है। बाबा कैसे वारस बनावेंगें यह भी गुहय बात है नां। अपना सब कुछ ऐक्सचेंज करना इसमे बुधी का काम है। गरीब तो झट ऐक्सचेंज कर देंगें। शाहुकार मुशकल ही करेंगें। जब तक कि पुरी रीती ज्ञान नही उठावें। इतनी हिम्मत नही रहती है। गरीबतो झट कह देते है कि बाबा हम तो आपको ही वारस बनावेंगें। हम पास रखा ही क्या है। वारस बना कर फिर शरीर निर्वाह भी अपना करना है। युक्तियां बहुत बताते है। बाप तो सिर्फ देखते है कि कोई पापकर्म मे तो पैसे खराब नही करते है। मनुष्य को पुण्यात्मा बनाने मे पैसे लगाते है। सर्विस भी कायदे सिर करते है? यह पुरी जांच करेंगें। कितना निकाल सकते है वो सब राय देंगें। धन्धे मे ईश्वर अर्थ निकालते थे नां। वो तो था इन डोयरेक्ट। अभी तो बाप डोयरेक्ट आये है। मनुष्य समझते है कि हम जो कुछ करते है उनका फल दुसरे जन्म मे ईश्वर देते है। कोई गरीब दु:खी है तो समझेंगें इस जन्म का कर्म ही ऐसा किया हुआ है। अच्छे कर्म किये है तो सुखी है। अभी कर्मो की गति बाप बैठ समझाते है। रावण राज्य मे तुम्हारे कर्म सभी विकर्म हो जाते है। अच्छे कर्मो का करके अल्प

न के लिए सुख मिलता है। ऐसे नहीं कि सारी लाईफ भर ही कोई हेल्थ वेल्थ रहती है। नहीं कोई नां कोई रोग रिटपिट जरुर होगी। क्योंकि अल्प काल का सुख है। अभी बाप कहते है कि मैं डायेक्ट आया हूं। अभी यह रावण राज्य ही खलास होना है। रावण राज्य ही अलग है। राम राज्य अलग है। राम राज्य को अब शिव बाबा स्थापन कर रहे है। बाकी शास्त्रो मे जो यह बाते लिख दी है कि राम की सीता चुराई गई। यह हुआ। ऐसी कोई बात है नही। वहां तो दुःख का नाम नही होता। कहते भी है राम राजा... तो सीता भी तो राम के साथ ही आ गई नां। वहां पर फिर अधम की बात हो ही कैसे सकती है। रामायण ही कितनी लम्बी चौडी वाहयात बातो से भर दी है। सभी वाहयात बाते है। ऐसे किताब पढ़ने से कोई भगवान मिल सकता है क्या। कितनी बाते बनाई है। यह फिर भी बनेगी। बाप कहते है व्यास को कैसे कहां से अक्ल आया जो इतनी लम्बी कहानी बैठ बनाई है। कमाल की बात है रामायण बनाना अब तुम समझते हो कि वो सब है भक्ति मार्ग। ज्ञान तो बिलकुल ही अलग है। भक्ति अलग है। तुम जानते हो कि हम फिर भी भक्ति को पास करेंगें। फिर बाप आकर ज्ञान देंगें। फिर भी भारत हेवन बनेगा। भारत कितना शाहुकार था। अब क्या बन गया है। तुम जानते हो कि यह चक्र कैसे फिरता है। भारत ही फिर गरीब हो पड़ता है। भारत ही आज से 5000वर्ष पहले स्वर्ग था। इन(ल-न)का राज्य था। पहले यदी इनकी चली। कृष्ण प्रिन्स था फिर शादी की तो राजा बना। नारायण नाम पडा। यह भी तुम तोअभी समझते हो तो तुम्हे वण्डर लगता है। बाबा आप रचता और रचना की नालेज सुनाते हो। आप हमको पढाते हो। बलिहार जावे। हमको तो सिवाय एक बाप के और कोई को भी याद नही करना है। अन्त तक पड़ना है तो जरुर टीचर को याद करना है। स्कूल मे टीचर को याद करते है नां। उन स्कूलो मे तो कितने टीचर्स होते है। हर एक दर्जे का टीचर अलग। यहां तो एक ही टीचर है। कितना लवली बाप लवलीटीचर है। आगे भक्ति मार्ग मे अन्धश्रधा से याद करते थे। अभी तो डायेक्ट बाप पढाते है तो कितनी खुशी होनी चाहिये। फिर भी कहते है बाबा भूल जाते है। पता नही हमारी बुधी आपको याद क्यो नही करती है। गाते भी है कि ईश्वर की गत मत न्यारी है। बाबा आपकी मत गत और सदगति की तो बिलकुल ही न्यारी है वण्डरफुल है। ऐसे-2 बाप को याद करना चाहिये। स्त्री अपने पति के गुण गाती है नां। बरा अच्छा वडा मीठा। यह-2 उनकी प्रापर्टी है। अन्दर-2 मे खुश होती रहती है। यह तो पतियों का भी पति है। बापों का बाप है। इनसे कितना हमको सुख मिलता है। और सबसे तो दुःख ही मिलता है। हां टीचर ही से सुख मिलता है क्योकि पढाई से इनकम होती है। बाकी गुरु से क्या मिलता है। अभी तुम्हारी बुधी मे है कि इन गुरुओं को तो छूना भी नही चाहिये। यह तो दुरगति मे ले जाते है। आजकल तो गुरु की इतनी सेवा करते है जो कि पति की भी नहीं करते होंगें। पावं धोकर पीते है। जबकि कहते है कि पति ही परमेश्वर है तो साधुओं के पास जाकर क्या करते है। अभी इस भक्ति मार्ग से अपने को और दुसरो को बचाना है। गुरु हमेशा किया जाता है वानप्रस्थ अवस्था मे। बाप भी कहते है कि मै वानप्रस्थ मे आया हूं। यह भी वानप्रस्थी तो मै भी वानप्रस्थी। यह सब मेरे बच्चे है। बाप टीचर गुरु तीनो ही इकठे है। बाप टीचर भी बनते है तो गुरु बन कर साथ भी ले जाते है। उस एक बाप की ही महिमा है। यह बाते कोई शास्त्रो आदमे नही है। सृष्टी की आदि मध्य अन्त का राज कोई समझा नही सकते। रचता को ही नही जानते है। अब रचता अपनी और रचना की पहचान दे रहे है। बाबा हर बात अच्छी रीती समझाते रहते है। इससे ऊंची नालेज कोई होती नही है। नां जानने की दरकार ही रहती है। हम सब कुछ जान कर विश्व का मालिक बन जाते है। और ज्यादा क्या बनेंगें? बच्चो की बुधी मे यह हो तब खुशी मे रहे और बाप की याद मे रहे। पुण्यात्मा बनने लिये याद मे जरुर रहना है। इसमे ही माया विघ्न डालती है। भूल जाते है। माया के तूफान बहुत आते है। यह भी ड्रामा मे नूंध है। ओम